सम्पादकीय

प्राय: देखा जा रहा है कि निर्वाचन आयोग भी चुनाव में सुधारों की अक्सर बात करता है तथा अधिक सुधार चुनाव की व्यवस्था तथा प्रक्रिया में किए भी गए हैं, परंतु पिछले वर्षो से चुनाव में ऐसे प्रत्याशी हर पार्टी द्वारा खड़े किए जाते हैं जिन पर आपराधिक गतिविधियों के मामले दर्ज हैं और मामले अदालत में चल रहे हैं। हर साल ऐसे प्रत्याशियों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। जिनकी स्वच्छ छवि नहीं है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट द्वारा भी इस प्रकार का निर्णय भी दिया गया है कि विभिन्न पार्टियों द्वारा चुनाव में उतारे गए प्रत्याशियों का पूरा विवरण देना होगा तथा उन पर किस प्रकार के अपराधिक मामले दर्ज है इसका विवरण भी बताना होगा। जिससे जनता को प्रत्याशियों के संबंध में पूरी जानकारी मिल सके। यह निर्णय स्वागत योग्य है। परंतु व्यवहारिक दृष्टि से देखा जा रहा है कि पिछले 15 वर्षो से पार्टी किसी सामान्य व्यक्ति की तुलना में जीतने की संभावना वाले व्यक्ति को ही चुनाव में टिकट देकर प्रत्याशी बनाती है, भले ही वह अपराधी क्यों ना हो। उनका तर्क यह भी रहता है कि अभी अपराध सिद्ध नहीं हुआ है। सालों मुकदमा चलता है और पेशियां होती रहती है, तब तक कार्यकाल भी पूरा हो जाता है। तथा सुविधाओं का लाभ लेते हुए सत्ता या विपक्ष में रहते हुए उम्मीदवार अपना दबदबा तथा प्रभाव भी बड़ा लेता है। वर्ष 2004 से 2019 के बीच की अवधि में ही संसद में पहुंचने वाले ऐसे सदस्यों की संख्या 125 से बढ़कर 236 हो गई है। उत्तर बिहार के 1 जिले का एक अपराधी किस्म का नेता जनता के आशीर्वाद से 4 बार लोकसभा की शोभा बढ़ा चुका है। बिहार में जिन अपराधियों पर मुकदमा चलता है उनमें से 100 में से 91 निरपराध छूट जाते हैं, जबकि केरल में 100 अपराधियों में से 91 को सजा मिलती है और केवल 9 ही निर्दोष छूट पाते हैं। सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि अपराधी चरित्र वाले प्रत्याशी को सही व्यक्ति की तुलना में क्यों टिकट दिया है यह राजनीतिक दलों को अपने विज्ञापन में बताना पड़ेगा। परंतु राजनीतिक दल के पास एक ही जवाब होगा कि हमारे प्रत्याशी को गलत तरीके से फंसाया गया है तथा उस पर कोई अपराध भी सिद्ध नहीं हुआ है। इस तरीके से तो राजनीति में अपराधीकरण की समस्या दूर ही नहीं हो सकेगी। वास्तव में संसद को ही चुनाव में सुधार के लिए पहल करना होगी तथा अपराध करने वालों को चुनाव में खड़े होने से रोकने का कानून बनाना होगा अन्यथा केवल विज्ञापनबाजी से सुधार संभव नहीं दिखता है। जनता को भी तार्किक दृष्टि से विचार कर भावना में बहने तथा प्रभाव में आने की बजाय विवेक से मतदान करने का संकल्प करना होगा तभी लोकतंत्र में सही प्रतिनिधियों का चुनाव हो सकता है।

राजेश झाला ए.रज़ाक

भक्ति रस

"दिन जिंदगी के गुजरते जाएंगे"

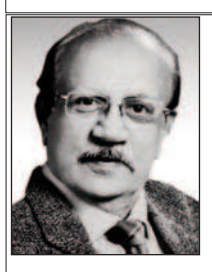

दिन जिंदगी के यूँ ही गुजरते जाएंगे।
''इरा'' को प्यार करते है करते रहेंगे।।

देखी है सूरत जब से, उसे प्यार करने
लगे हैं।
इनायत हुई जबसे उनकी, जिंदगी मानने
लगे हैं।।
उसकी आंखों में अश्कों के जो काँटे आए।
अधरों से हम अपने निकालते रहेंगे।।

दिन जिंदगी के यूँ ही गुजरते जाएंगे।
''इरा'' को प्यार करते है करते रहेंगे।।

उसके आने से हमारी तकदीर बदली है,
प्यार के फ्रेम में नई तस्वीर ढली है।
उसकी मरमरी बाँहों के सहारे,
मेरी गिरती दुनियां संभल चली है।।

तूफान ने जो बाँह छुड़ाने की कोशिश की।
उस तूफान को हम कुचलते रहेंगे।।

दिन जिंदगी के यूँ ही गुजरते जाएंगे।
''इरा'' को प्यार करते है करते रहेंगे।।

उसके पाक इन्तहा मोहब्बत हो गई मुझे,
कोई चाहे तो मेरा इम्तेहां भी ले ले।
जान ईमान देना कुछ भी नहीं मेरे लिए,
हार जाऊँ तो मेरे खुदा, मेरी माशुका ले ले।।

हर जनम ये दावा करते रहेंगे।
''इरा'' को प्यार करते है, करते रहेंगे।।

दिन जिदंगी के यूँ ही गुजरते जाएंगे।
''इरा'' को प्यार करते है करते रहेंगे।।

डॉ. (केप्टन) एन.के.शाह
शारदा पैथ लेब,
48, वेदव्यास कॉलोनी, रतलाम

ऐतिहासिक भाषा विज्ञान

भाषापरिवार...

गतांक से आगे....

भारतीय आर्य भाषाएं

इ. अपभ्रंश उपकाल

डॉ.जयकुमार जलज

इन उल्लेखों से स्पष्ट है कि छठी शताब्दी तक भाषाविशेष के अर्थ में अपभ्रंश शब्द का पर्याप्त प्रचलन हो गया था। इतना ही नहीं; अन्तिम दो उल्लेखों से यह भी स्पष्ट है कि अपभ्रंश भाषा में रचे गये साहित्य को पर्याप्त महत्त्व भी प्राप्त हो चला था। भामह ने उक्त पंक्ति में भाषा के आधार पर काव्य के तीन प्रकार- संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश कहे हैं। धरसेन द्वितीय उपर्युक्त पंक्ति में अपने पिता गुहसेन को संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं की प्रबन्धरचना में निपुण घोषित करते हैं। घोषणा में उनका गर्व ध्वनित होता है। उक्त पंक्तियों में प्राकृत का अर्थ महाराष्ट्री प्राकृत है-इसी अर्थ में उसका अन्यत्र भी प्रयोग हुआ है। इस ष्टस् सबका अभिप्राय यह है कि अपभ्रंश का स्थान संस्कृत, प्राकृत (महाराष्ट्री) के साथ हैं।

पालि, पैशाची, शौरसेनी, मागधी आदि इरा सम्मानित पंक्ति से बाहर हैं। 9वीं शताब्दी में राजशेखर ने इस पावत में पैशाची को और बैठा दिया। लेकिन अपभ्रंश का स्थान जहाँ का तहाँ। उन्होंने राजाओं के कवि-दावार का चित्रण करते हुए राजसिंहासन के चारों ओर चार भाषाओं के कवियों के बैठने की व्यवस्था दी और. संकेत किया- उत्तर की ओर संस्कृत, पूर्व की ओर प्राकृत, पश्चिम की ओर अपभ्रंश और दक्षिण की ओर पैशाची भाषा के कवियों का स्थान निर्धारित है। यहाँ भी प्राकृत और पेशाची शब्दों का एक साथ प्रयोग इसी बात का समर्थन करता है कि प्राकृत का अर्थ महाराष्ट्री प्राकृत ही है।

भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में किसी भाषा को आभीरोक्ति कहा है। आगे चलकर दण्डी के कथन 'आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृताः' (काव्यों में आभीर आदि की भाषा को अपभ्रंश नाम से स्मरण किया जाता है) से सिद्ध होता है कि अपभ्रंश ही आभीर आदि जातियों की भाषा या आभीरोक्ति थी। आभीरों के अतिरिक्त गुर्जर, जिनके कारण गुजरात नाम पड़ा तथा ऐसी ही अन्य गोपालक जातियाँ अपभ्रंश भाषाभाषी थीं। गाय के पालन से सम्बन्धित इन जातियों में ही गौ शब्द के वे विभिन्न रूप प्रचलित हुए होंगे जिनका उल्लेख पतंजलि ने किया है। ये जातियाँ पश्चिमोत्तर भारत की थीं और धीरे-धीरे दक्षिण-पश्चिम भारत में फैल रही थीं। इनके राज्य भी स्थापित हो गये थे। इन जातियों के प्रसार और अन्य जातियों में इनके मिश्रण के कारण अपभ्रंश भाषा की आरम्भिक विशेषताएँ सबसे पहले भारत के पश्चिमी प्रदेश में ही प्रकट हुईं। भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में जिस उकार-बहुला भाषा का उल्लेख किया है, उसका सम्बन्ध उन्होंने पश्चिमोत्तर भारत से ही जोड़ा है। **क्रमशः**

ऐतिहासिक भाषा विज्ञान पुस्तक के द्वितीय संस्करण से साभार

व्यंग्य आलेख

'बी.पी. रेखा'

गतांक से आगे..

वरिष्ठ विलाप

जब तक ये साठ के हुए तब तक पार्टी में किसी को युवा नहीं कहलाने दिया। साठ के पार हुए और अपनी ताकत के बल पर युवा आगे आ ही गए तो भी वरिष्ठों ने चैन नही लिया। वो तो थक हार कर इन्हें बैकफुट पर आना पड़ा। और अब चाहते हैं कि इन्हें वरिष्ठों का सम्मान मिले।' अपनी बिरादरी के कड़वे सच को बाहर आता देख विद्रोही जी के तेवर थोड़े नरम हुए। बोले, ' तो क्या हुआ। वरिष्ठ तो आखिर वरिष्ठ ही होता है। उसकी कोई उपेक्षा नहीं कर सकता।'

युवा छिछोरे ने फिर छेड़ा, 'लोग तो कह रहे हैं कि आप अपनी उपेक्षा से अधिक व्यथित हैं?'

इस बार विद्रोही जी का पारा सातवें आसमान पर चला गया। 'देखो छोकरे हम तो पुराने चावल हैं। हमने अच्छे-अच्छे को गिराया है और निकम्मों को भी नेता बनाया है। कोई हमारे बारे में उंगली नहीं उठा सकता है। हमारे काम और नाम के चर्चे आज भी देशभर में होते हैं। हम तो आखिर हम ही हैं।'

आशीष दशोत्तर

आत्ममुग्ध विद्रोही जी को देख युवा छिछोरेलाल को लगा कि दा साब तो सठियाने के साथ ही गठियाने के शिकार हो गए हैं। गठियाना मतलब जीवन भर उन्होंने जिसके लिए जो -जो गांठें बांधी थी उन्हें याद कर अपना शेष जीवन बिताना। उनकी इस पीड़ा से छिछोरे दुःखी भी था और उसे तरस भी आ रहा था। उसे लगा यह तो समय-समय का फेर है। कल तक दा साब ने किसी को आगे नहीं आने दिया और आज हालात ऐसे बन गए हैं कि दा साब को आगे आने के लिए हर तरह के हथकण्डे अपनाने पड़ रहे हैं। वरिष्ठ के इस विलाप पर पीड़ितों के चेहरों पर स्वतःमुस्कान बिखर रही थी।

निलम्बन महात्म्य

बड़े साहब ने जैसे ही ज्वाईन किया खब़रीलाल मिलने पहुंच गया। अपनी ही तरह वह भी निठल्ला। रोज साहब के दफ्तर के बाहर चक्कर लगाने वाला खब़री आज साहब के सामने बैठा था। अपना व्यर्थ सा परिचय देते हुए साहब से सवाल करने लगा। अपन को लगा यह बातचीत आपके वर्तमान के संतोश एवं भविष्य की निष्चिंतता के लिए जरूरी है। सो आप भी इस बातचीत का आनंद लें।

आपका नए जिले में स्वागत है। यह नया जिला है क्या? मैंने तो सुना था काफी पुराना है।

नए से मतलब आपके लिए। अपने लिए क्या नया और क्या पुराना।

क्रमशः

पुस्तक- बी.पी रेखा।

श्रद्धा के फूल

गतांक से आगे....

पुर्नमिलन

सचिन का अपहरण करने वाले चारों बदमाश पकड़े जा चुके थे, उन्होंने कबूल कर लिया था कि वे बच्चे का अपहरण करके फिरौती वसूल करना चाहते थे। उनसे यह भी मालूम हुआ कि वे पहले भी इसी प्रकार की वारदात कर चुके थे। बदमाशों के बयान सुनने के बाद सचिन के पिता ने अपना ट्रांसफार भोपाल करने हेतु आवेदन कर दिया था। वे सचिन की फिरौती का सोचकर बहुत डरे हुए थे।

कुछ दिन पश्चात सचिन के पिताजी का ट्रांसफर भोपाल हो गया तथा उन्होंने भोपाल में किराये से एक मकान भी ले लिया था। जब उनका सामान ट्रक में जाने लगा तो सचिन ने पिताजी से कहा कि पापा मोती को भी साथ ट्रक में ले चलें, किन्तु मम्मी-पापा इसके लिए तैयार नहीं हुए। .

उन्होंने कहा-बेटा, वहाँ नया मकान है। मकान मालिक भी साथ रहता है। वह किसी भी हालत में मोती को नहीं रखने देगा। अतः अब तुम्हें मोती से मोह छोड़ना पड़ेगा और चुपचाप रात की गाड़ी से निकल जाना है, अन्यथा वह दौड़ता हुआ आजायेगा।

सचिन बहुत उदास हो गया। मोती भी समझ गया था कि कुछ बात है। आज सचिन उससे ज्यादा बात नहीं कर रहा है, फिर भी वह सचिन के आगे-पीछे फिरता रहा।

जिस जानवर को हम प्यार करते है, जब उसको छोड़ते है तब जानवर को भी आभास होने लगता है कि मेरा मालिक मुझसे विमुख हो रहा है, जैसे पाली हुई गाय को बेचते समय गाय को भी यह आभास हो जाता है कि उसे बेचा जा रहा है। .

भोपाल गाड़ी रात्रि के एक बजे के बाद जाती थी। अतः सचिन का पूरा परिवार चुपचाप टू सीटर में बैठकर स्टेशन निकल गये। उन्होंने देखा कि मोती सो रहा है तथा वे रेलगाड़ी में बैठकर सुबह 8 बजे भोपाल पहुँच गये। मोती के बिना सचिन भारी उदास था किन्तु क्या करता और कोई उपाय ही नहीं था। मोती को साथ लाना संभव ही नहीं था।

हरिशंकर भटनागर

धीरे-धीरे समय गुजरने लगा। मोती की याद सचिन के दिल से जाने लगी। उसका मन पढ़ाई में लगने लगा। अब उसके कई मित्र बन गये थे। कभी-कभी किसी कुत्ते को देखता तो सोचता हमारे आने के बाद मोतीने हमें न जाने कहाँ-कहाँ ढुंढा होगा। शायद स्कूल भी गया होगा। उसके पिता ने एक दिन अपने पुराने मकान मालिक से बात की तो उसने बताया कि आपके जाने के बाद मोती किसी भीटू सीटर के पीछे दौड़ता था। शायद सोचता था कि किसी टू सीटर में सचिन हो, फिर वह बहुत दिनों तक उदास पड़ा रहता।

कुछ दिन बाद पता नहीं वह कहाँ चला गया अब कहीं भी दिखाई नहीं देता।

सचिन की माँ को भी मोती की याद रह-रहकर आती रही।

क्रमशः

पुस्तक- मन की आवाज कहानियां

महाबली और वामन अवतार की कथा

गतांक से आगे... महाबली गुरु के शब्दों को सुनते थे और अपनी बात पर अटल रहे और कहा 'मुझे वैभव खोने का भय नही है बल्कि अपन प्रभु को खोने का भी है इसलिए मैं उनकी इच्छा पुरी करना चाहता हूं।' ये कहकर महाबली वहा से चला गया।

महाबली फिर से उस बालक के पास गया और स्नेह से कहा 'मान्यवर, मैं आपकी बात बीच में छोडकर जाने के लिए क्षमा चाहता हूं इसलिए अब आप अपनी इच्छा बताइये।' उस बालक ने महाबली की और शांत स्वभाव से देखा और कहा 'मुझे केवल तीन पग जमीन चाहिए जिसे मैं अपने पैरो से नाप सकू।'

महाबली ने जैसा सोचा वैसा नही हुआ क्योंकि वो सोच रहा था कि वो उसके प्राण मांगेगे। महाबली ने हँसते हुए कहा 'केवल तीन पग जमीन चाहिये मैं तुमको दूँगा'।

बालक ने उसे बीच में रोकते ही कहा 'अगर कोई व्यक्ति केवल तीन पग से संतुष्ट नही हो सकता तो वो किसी से भी संतुष्ट नही हो सकता, महाराज मेरी केवल यही इच्छा पुरी कर दीजिये।'

उस बालक को देखकर महाबली में चुम्बकीय प्रभाव आया और उसने सिर हिलाया और कहा 'आप तीन पग जमीन माप कर ले लीजिये'।

जैसे ही महाबली ने अपने मुह से ये शब्द निकाले वामन का आकार बढ़ गया और धीरे धीरे बढ़ता ही गया। वो बालक इतना बढ़ गया कि बाली केवल उसके पैरो को देख सकता था। वामन आकार में इतना बड़ा था कि कि धरती को उसने अपने एक पग में माप लिया।

दुसरे पैर में उस दिव्य बालक ने पूरा आकाश नाप लिया। भगवान विष्णु के इस विशाल अवतार को त्रिविक्रम अवतार कहते है। महाबली भगवान के इस चमत्कार को देखकर स्त्ब्ध रह गया। अब उस बालक ने महाबली को बुलाया 'महाराज, आपने मुझे तीन पग जमीन देने का वचन दिया था और मैंने अपने दो पगों में धरती और आकाश को नाप लिया है। अब मुझे अपना तीसरा कदम रखने के लिए कोई जगह नही बची, तुम बताओ मैं अपना तीसरा कदम कहा पर रखूं।'

महाबली ने उस बालक की बात सुनते हुए मुस्कुराकर कहा 'प्रभु , मैं वचन तोड़ने वालो में से नही हु आप तीसरा कदम मेरे शीश पर रखिये'।

क्रमशः

प्रस्तुति- हितेन्द्र जोशी
रतलाम

हिंदी सिनेमा में पहली बार

एनसाइक्लोपीडिया ऑफ बॉलीवुड डॉयरीज

जनवकालत

''कलाकारों की प्रथम फिल्म''

»»बप्पी लहरी- (संगीत-निर्देशक)- 'जख्मी'।

»»असीन- 'गजनी'।

»»नरगिस फकरी- 'रॉकस्टार'।

»»परिणीती चौपड़ा- 'लेडिज वर्सेज रिक्की बहल' (2011)।

»»सोनाक्षी सिन्हा- 'दबंग'।

»»1938 से 'क्रॉनिकल' के फिल्म- समीक्षक की हैसियत से ख्वाजा अहमद अब्बास ने 'फार्मूला' फिल्मों की धज्जियाँ उड़ानी शुरू की।

»»1940 में अब्बास ने 'नया संसार' की पटकथा लिखी।

»»हिंदी फिल्म- जगत में 'नवयथार्थवाद' के प्रवर्तक- 'अब्बास'।

»»कंगना राणावत- 'गैंगस्टर' (2006)।

»»पूनम पाण्डे- 'नशा'।

»»क्रिस्टीना अरवीना- 'यमला पगला दीवाना'- पार्ट- 2।

»»मधुबाला के जीवन में एक शख्स ऐसा भी आया था, जिसने मधुबाला द्वारा दिया गया विवाह का प्रस्ताव बड़ी निष्ठुरता से ठुकरा दिया था। वे व्यक्ति थे 1940-1950 के दशक के मशहूर संगीतकार एस. मोहिंदर।

»»ऋचा चड्ढा- 'ओए लकी-लकी ओए' दिवाकर बनर्जी।

»»सुचेता खन्ना- 'अनजान-अनजानी'।

»»बतौर संगीतकार खय्याम की पहली फिल्म- 'हीरा-रांझा' (1948) इसमें रहमान वर्मा के साथ संगीत था।

»»प्रीति झिंगयानी- 'मोहब्बते'।

»»ऋतुपर्णा घोष- प्रथम हिंदी फिल्म- 'रेनकोट'।

»»रेमिल डीसिटवा- (राइटर डॉयरेक्टर) 'कुर्बान' (2009)।

»»सिद्धार्थ मल्होत्रा- 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' (2012)।

»»आलिया भट्ट- 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' (2012)।

»»बतौर गीतकार डॉ. धनीराम प्रेम की पहली फिलम- 'दो बदमाश'।

»»संदेश शांडिल्य (संगीतकार) 'कभी खुशी कभी गम' (2011)।

»»सोनल चौहान 'जन्नत' (2008)।

»»अर्जुन कपूर 'इश्क जादे'।

»»इंग्लिश अभिनेत्री व ड्रेस डिजाइनर फागुन 'भोपालः अ प्रेयर फॉर रेन'।

»»देवेन वर्मा की पहली बड़ी फिल्म- 'देवर'।

»»एलिना कजन- 'क्लर्ग' (बंगाली)।

»»'प्राग' (हिंदी)।

»»उदिता गोस्वामी- 'पाप'।

»»मोनिका डोगरा- 'धोबीघाट'।

»»1960 में प्रदर्शित मो. सादिक निर्देशित 'चौदहवीं का चांद' के गीत 'मिली खाक में मोहब्बत..... जला दिल का....'' के गायन के लिए मो. रफी को पहला फिल्म फेयर पुरस्कार मिला।

जुबैर आलम कुरैशी

»»1960 में रिलीज हुई 'जीवन नैया' बतौर गायक एस.एन. त्रिपाठी प्रथम फिल्म।

»»अशोक कुमार- 'जीवन-नैया'।

»»राजश्री प्रोडक्शन की शुरूआत- 1962।

»»पहली फिल्म 'आरती' (निर्माता फणी मजमूदार)।

»»मिलिंद 'मिस्टर प्राइम मिनिस्टर'।

»»'विकी डॉनर' से बॉलीवुड में अपनी उपस्थिति का एहसास कराया, यामी गौतम ने।

»»धनुष की पहली फिल्म- (हिंदी)-'रांझणा'।

»»इशिता व्यास- 'पीपली लाइव'।

»»ओमप्रकाश मेहरा 'अक्स'।

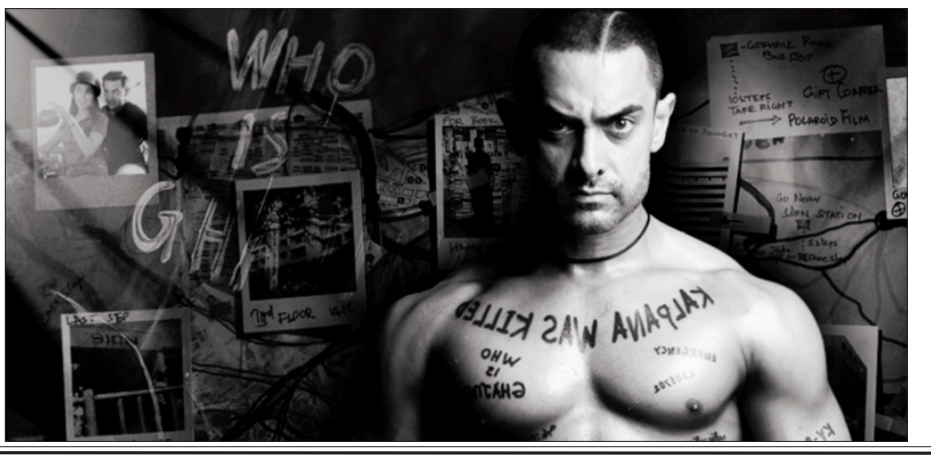

सम्पर्क-
9981426313